International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-03-2021, Accepted: 03-04-2021, Published: 05-05-2021
www.hindijournal.com
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 08-10

# विष्णु नागर के साहित्य में प्रगतिशील चेतना

**डॉ. रंजना**

प्राचार्या, मां कस्तूरबा गांधी महिला कॉलेज ऑफ एजुकेशन भरतपुर, राजस्थान, भारत

**सारांश**

विष्णु नागर समकालीन हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं| उनका साहित्य वस्तुतः प्रयोग धर्मी है| आपका साहित्य आपके जीवन और विचारधारा से गहराई तक जुड़ा है। फिर लगभग 30 वर्षों से कविता के क्षेत्र में सक्रिय हैं तथा उन्होंने एक साथ एक समर्थ कहानीकार, व्यंगकार, टिप्पणी लेखक पत्रकार होने का सबल प्रमाण दिया है। चौकन्नापन विष्णु नागर का स्वभाव है| आधुनिक हिंदी साहित्य में 'प्रगति' शब्द का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। प्रगति अंग्रेजी के प्रोग्रेस का हिंदी रूपांतरण है जिसका अर्थ है विकास करना, निरंतर आगे बढ़ना| संस्कृति कोशों में 'प्र 'उपसर्ग पूर्वक गम् धातु लगाकर बने हुए शब्द मिलते हैं, जैसे प्रगम, प्रगमन, प्रगमननम तथा प्रगत। 'प्रगम' का अर्थ है आगे बढ़ना, उन्नति करना या प्राप्त करना आदि| कार्ल मार्क्स ने प्रगति को विशिष्ट अर्थ प्रदान किया है। उन्होंने स्वीकार किया है कि प्रगति में गति का प्रभाव होता है| प्रगति आगे बढ़ने का नाम है, लेकिन ऐसी प्रगति अधूरी है जो एकमात्र आगे बढ़ने का नारा लगाती हुई चलती है। एक विशिष्ट दिशा में आगे बढ़ना ही प्रगति का सच्चा स्वरूप है। प्रगतिशील चेतना भारतीय संस्कृति के विकास की अगली कड़ी है| भारतीय साहित्य को प्रगतिशील चेतना मार्क्सवाद या किसी विदेशी संस्करण की देन नहीं अपितु प्रगतिशील चेतना की जननी भारत की अपनी विषम परिस्थितियां हैं। प्रगतिशील कविता को ही लोकवादी और जनवादी कविता कहा जाता है। आज का प्रगतिशील कवि लोकवादी, जनवादी कवि है। प्रगतिशील चेतना प्राचीन के प्रति नवीन का आग्रह है। डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य में इस प्रगतिशील जीवन दृष्टि के प्रवेश की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। प्रेमचंद के उपन्यास और उनकी कहानियां तो प्रगतिशील हिंदी साहित्य की बहुमूल्य निधि हैं। साहित्य में प्रगतिशील चेतना का उदय अपनी संपूर्ण तेजस्विता और गरिमा के साथ सन 1936 ईस्वी से माना जाता है| सन 1935 ईस्वी में एम फास्टर के सभापतित्व में पेरिस में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' नामक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन हुआ| सन 1936 ईस्वी में सज्जाद जहीर और मुल्क राज आनंद ने भारतवर्ष में अपने प्रयत्नों द्वारा 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की| प्रेमचंद्र की अध्यक्षता में लखनऊ में इसका प्रथम अधिवेशन हुआ। विष्णु नागर के साहित्य की विशेषता आधुनिक एवं प्रगतिशील है। उन्होंने अपने साहित्य में मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याओं को रेखांकित किया है। आम आदमी के जीवन में घटने वाली सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक घटनाओं को बड़ी सजीवता के साथ लिया है क्योंकि उसका अंतरराष्ट्रीय महत्व है। आपने आम आदमी के जीवन की परेशानियों को बड़ी ही जीवंतता से अभिव्यक्त किया है।

**मूलशब्द:** समकालीन, प्रतिनिधि, प्रगतिशील, चौकन्नापन

## प्रस्तावना

श्री विष्णु नागर समकालीन कविता और कहानी के प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं| नागर जी कविता के क्षेत्र में सक्रिय हैं तथा उन्होंने एक साथ कहानीकार, व्यंग्यकार, टिप्पणी लेखक एवं पत्रकार होने का सबल प्रमाण दिया है। वे लेखक के रूप में दिनमान से जुड़े। 'नवभारत टाइम्स' के संपादकीय विभाग से आप अनेक वर्षों तक जुड़े रहे, फिर' दैनिक हिंदुस्तान ' से जुड़े

और उसके बाद' हिन्दुस्तान टाइम्स समूह' की जानी मानी साहित्यक एवं सांस्कृतिक पत्रिका' कादंबिनी ' में सहयोगी संपादक के पद पर कार्यरत रहे|

विष्णु नागर का साहित्य उनके जीवन और विचारधारा से गहराई तक जुड़ा है | शिक्षा ग्रहण करने के दौरान ही आपकी साहित्य में अभिरुचि पैदा हो गई थी | आस - पास के परिवेश से प्रभावित होकर उन्होंने अनेक रचनाएं लिखी | वे मुक्तिबोध की रचनाओं से बहुत प्रभावित थे | अज्ञेय जी को भी उन्होंने रुचि से पड़ा| रघुवीर सहाय और श्रीकांत वर्मा की रचनाओं से भी प्रभावित हुए | नागर जी पर चेखव,रघुवीर सहाय और ब्रे ख्त का प्रभाव रहा है| उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि ब्रेख्त मेरे अत्यंत प्रिय नाटककार और कहानीकार हैं |एक साक्षात्कार में नागर जी ने अत्यंत विनम्रता के साथ कहा कि-" मुझ पर ब्रेख्त का ही नहीं, बहुतों का असर है | पाब्दो नेरुदा,नाजिम हिकमत, वाल्ट, गालिब, नजीर अकबरावादी, कबीर, मीरा और सूर का असर भी है। नागार्जुन और मुक्तिबोध का असर भी है।... बचपन में हरसिंगार को ढेर - ढेर फूलों की जमीन पर चादर बिछाते देखा है। मैं उन्हें क्या भूल सकता हूँ! मैं चीटियों के श्रम से और कुत्तों के चौकन्नेपन से भी प्रभावित हूँ |"[1]

विष्णु नागर का व्यक्तित्व बहुआयामी है | वे एक समर्थ और जागरूक पत्रकार हैं |एक चौकन्ने और सामाजिक सरोकारों से जुड़े पत्रकार |यह प्रवृत्ति उनकी टिप्पणियों, व्यंग्यो,कविताओं और कहानियों में भी परिलक्षित होती है |इस संदर्भ में ओम निश्चल जी की पंक्तिया उद्धरणीय हैं -" आज भी यदि गद्य को कविता की कसौटी माना जाए तो इस लिहाज से उनकी कहानियाँ, व्यंग्य, आलोचना और टिप्पणियां उनकी सशक्त गद्यात्मक क्षमता का परिचायक हैं| .. पेशे से पत्रकार होने के नाते उनकी कविता पत्रकारिता से अनासक्त नहीं है| कहना न होगा कि अखबारी दुनिया की हलचल,खबरें और टिप्पणियां उनकी कविताओं की निर्मिति में उत्प्रेरक या अनुपूरक काम करती है|[2]

विष्णु नागर का साहित्य रूढ़िवादिता से परे प्रगतिशीलता की ओर उन्मुख है| कहानीकार के साथ-साथ आप एक विलक्षण कवि भी हैं | आप की कविताएं पाठक के मानस पटल पर अंकित हो जाती हैं|

**प्रगतिशील चेतना**

कार्ल मार्क्स ने प्रगति को विशिष्ट अर्थ प्रदान किया है|एक विशिष्ट दिशा में आगे बढ़ना ही प्रगति का सच्चा स्वरूप है | पहली बार मार्क्स ने प्रगति का वैज्ञानिक विश्लेषण किया| प्रगति के स्वरूप पर वैज्ञानिक विश्लेषण युगानुरूप हुआ| वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रचार-प्रसार ने ही 'प्रगति 'की भावना को लोकप्रिय बनाया | 3 और 17 वी सदी के बाद जब से समाज का ढांचा यांत्रिक परिवर्तनों से अधिक प्रभावित हुआ, प्रगति का वैज्ञानिक विश्लेषण सघनतर होता गया | [4] मार्क्स तथा एंगेल्स ने भौतिकी तथा रसायन शास्त्र के सहयोग से अपने सिद्धांत को वैज्ञानिक बनाया | प्रगतिशील चेतना भारतीय संस्कृति के विकास की अगली कड़ी है| प्राचीन काल से ही भारतीय चिंतकों और विचारकों के चिंतन और अनुभूति में प्रगतिशील चेतना विद्यमान रही है |भारतीय साहित्य को प्रगतिशील चेतना मार्क्सवाद या किसी विदेशी संस्करण की देन नहीं अपितु प्रगतिशील चेतना की जननी भारत की अपनी विषम परिस्थितियां हैं |राष्ट्रीय धरातल पर बदलते हुए राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मूल्य प्रगतिशील चेतना को एक नई दिशा प्रदान करते हैं | प्रगतिशील कविता को ही लोक वादी और जनवादी कविता कहा जाता है।

विष्णु नागर की कविताएं विचलित कर देने का काम करती हैं| वह भी बड़ी खामोशी से, सादगी भोलेपन से,कभी-कभी शरारती लहजे में भाषा की गहरी समझ और अनूठी अभिव्यक्ति के बूते भी। उदा०-

"देवता जिधर दौड़ रहे हैं
उधर मेरी बच्ची है
कुचल न जाए
मेरी बच्ची
वह धूल के रंग में - रंगी है।"

नागर जी ने परजीवी वर्ग के विरोध में कई कविताएँ लिखी हैं, जिनमें इनके प्रति घृणा और आक्रोश की भावना अभिव्यक्त हुई है -

"बड़े-बड़े लोग कद्दू हैं
कुछ मीठे और सख्त हैं
मगर कद्दू हैं।"6

विष्णु नागर की कहानियों में आम मनुष्य की जिन्दगी की करुण स्थितियाँ, सामाजिक राजनीतिक विडम्बनाओं को लेकर एक बेचैनी है, जिसकी ध्वनियाँ उनकी अधिकतर कविताओं में है। मार्मिक अर्थपूर्ण संस्मरणों और करुणाजनित व्यंग्य दृष्टव्य है

"तुम क्या ढूँढ़ रहे हो मेरे बस्ते में
दस्तखत करने के लिए पेन
या इमली?"7
वक्त होता जा रहा है
और स्कूल की घंटी बर्रा रही है..
आओ मेरे यार बहुत जोर से कसो मेरी हथेली
श्यामपट पर
चाक से लिखने के लिए
मुझसे अब अंतिम उत्तर मांगा जाएगा
वक्त होता जा रहा है
और स्कूल की घंटी बर्रा रही है|"8
"मैं दुअन्नी का आदमी
आठ आने की कलम से
लिखता हूँ
वह भी
वर्तमान के बारे में।"9

## उपसंहार

कविता हो या गद्द के रूप में विष्णु नागर की प्रगतिशील चेतना समाज के समक्ष आ गई है | सिस्टम, प्याज, नयाराष्ट्रगान, 21वीं सदी, इस तरह 1 दिन, जनतंत्र में, महाकवि बनने का धंधा आदि में विद्रूप स्थितियों के ताजा संदर्भ दिखाई देते हैं और एक नए ढंग के कवि सामर्थ्य की झलक देखने को मिलती है।

विष्णु नागर की रचनाओं में उनकी प्रगतिशील दृष्टि सर्वत्र संचरित है |वे सर्वहारा वर्ग के सामाजिक - वैयक्तिक जीवन की स्थितियों, विडंबनाओं, अमानवीयता और जड़ता को तोड़कर एक खुशहाल भविष्य की कामना करते हैं।

## सन्दर्भ सूची


1. विष्णु नागर से ललित कार्तिकेय का साक्षात्कार, पृ० 68-69.
2. वह घर, घर नहीं, जिसमें कई कई घर नहीं, समीक्षा वागश कलकत्ता अंक पृ०106
3. The idea of progress. P.334-j.b.bory
4. The idea of progress.p.33A
5. समीक्षा, सोमदत्त, दुनियाँ है कागज पे रची, समीक्षा, अक्षर विश्व
6. विष्णु नागर, संसार बदल जायेगा, संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़-245101, 1985, आप तो रोने लगे, पृ०-44
7. विष्णु नागर, मैं फिर कहता हूँ चिड़िया, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, 1974, कविता नं०-32, पृ०-16
8. मैं फिर कहता हूँ चिड़िया... कविता नं०-2, पृ०-2
9. विष्णु नागर, संसार बदल जाएगा संभावना, रेवती कुंज, हापुड़- 245101, 1985, दुअन्नी का आदमी, पृ०-34.